

जब सितारे बोलते हैं

आधुनिक ज्योतिष की जीवंत यात्रा



ज्योतिषाचार्य तेजराज फाडिस

अंततः 'जब सितारे बोलते हैं' का वास्तविक अर्थ यह नहीं है कि वे हमें सीधे-सीधे भविष्य बताते हैं, बल्कि यह है कि वे हमें एक ऐसा प्रतीकात्मक और दार्शनिक माध्यम प्रदान करते हैं जिसके द्वारा हम अपने जीवन को समझ सकते हैं, अपने अनुभवों को अर्थ दे सकते हैं और अपने अस्तित्व के रहस्यों पर विचार कर सकते हैं, और यही आधुनिक ज्योतिष की सबसे बड़ी विशेषता है कि यह हमें केवल भविष्य की जानकारी नहीं देता बल्कि यह हमें वर्तमान को समझने और अपने जीवन को एक व्यापक और गहरे संदर्भ में देखने की क्षमता प्रदान करता है, और इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ज्योतिष की सच्चाई तारों की भाँति स्थिर नहीं बल्कि उनके प्रकाश की भाँति गतिशील है, जो समय और परिस्थिति के अनुसार अपने अर्थ को परिवर्तित करती रहती है, और यही इसकी वास्तविक शक्ति है, क्योंकि यह केवल ज्ञान का स्रोत नहीं है बल्कि यह अनुभव, अर्थ और चेतना का एक जीवंत प्रवाह है, जो मानव जीवन को निरंतर समृद्ध करता रहता है और उसे एक व्यापक ब्रह्मांडीय संदर्भ में स्थापित करता है।

जब हम 'जब सितारे बोलते हैं' जैसे आकर्षक और गहन शीर्षक पर विचार करते हैं, तो यह केवल एक साहित्यिक अलंकार नहीं रह जाता, बल्कि यह मानव सभ्यता के उस दीर्घकालीन अनुभव का प्रतीक बन जाता है जिसमें आकाश और मानव जीवन के बीच एक जीवंत संबंध को कल्पना की गई है, और यदि हम इस विचार को विस्तार से समझें तो यह स्पष्ट होता है कि ज्योतिष का मूल स्वरूप ही इसी संवाद पर आधारित है, जहाँ ब्रह्मांड को एक सक्रिय, अर्थपूर्ण और संकेत देने वाली सत्ता के रूप में देखा जाता है और मनुष्य स्वयं से ब्रह्मांड स्वयं का एक सूक्ष्म अंश मानते हुए उसके संकेतों को समझने का प्रयास करता है, और यह प्रयास किसी एक संस्कृति या कालखंड तक सीमित नहीं रहा बल्कि मेसोपोटामिया से लेकर भारत और यूनान तक।

विभिन्न सभ्यताओं में यह विश्वास विकसित हुआ कि आकाशीय पिंडों की गति केवल भौतिक घटना नहीं बल्कि एक प्रतीकात्मक भाषा है जिसके माध्यम से ब्रह्मांड स्वयं को अभिव्यक्त करता है, और इसी कारण प्राचीन ज्योतिष केवल भविष्यवाणी की विधा नहीं था, बल्कि यह समय, ऋतु, कृषि, धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक संरचना को व्यवस्थित करने का एक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक उपकरण भी था, क्योंकि उस समय खगोल विज्ञान और ज्योतिष के बीच कोई स्पष्ट विभाजन नहीं था, बल्कि दोनों एक ही ज्ञान प्रणाली के दो पहलू थे, जहाँ ग्रहों की गति का गणितीय अध्ययन और उनके अर्थ का दार्शनिक विश्लेषण एक साथ चलता था, और इस समन्वय ने



ज्योतिष को एक अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी परंपरा के रूप में विकसित किया, जिसमें ज्ञान का उद्देश्य केवल ब्राह्मण जगत को समझना नहीं बल्कि मानव जीवन के आंतरिक आयामों को भी प्रकाशित करना था, और इसी प्रक्रिया में क्लांडियस टॉलेमी जैसे विद्वानों ने ज्योतिष को एक व्यवस्थित और तार्किक स्वरूप प्रदान किया, वहीं भारतीय परंपरा में यह विद्या वेदांग के रूप में विकसित होकर धर्म, कर्म और आध्यात्मिकता के साथ गहराई से जुड़ गई, जहाँ यह माना गया कि ग्रहों की स्थिति केवल भौतिक घटनाओं का संकेत नहीं देती बल्कि यह कर्मों के परिणाम और जीवन की दिशा को भी प्रतिबिंबित करती है, और इस प्रकार ज्योतिष एक ऐसी प्रणाली बन गई जो केवल घटनाओं का पूर्वानुमान लगाने तक सीमित नहीं रही बल्कि यह जीवन के गहरे दार्शनिक प्रश्नों का उत्तर देने का माध्यम भी बन गई, और यदि हम इस परंपरा को आधुनिक संदर्भ में देखें तो यह स्पष्ट होता है कि ज्योतिष की यह मूल अवधारणा— कि ब्रह्मांड और मानव जीवन के बीच एक संबंध है—आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, भले ही इसके स्वरूप में परिवर्तन आ गया हो, क्योंकि आधुनिक युग में विज्ञान और तर्क के विकास ने ज्योतिष को चुनौती दी है।

परंतु यह चुनौती विनाशकारी सिद्ध नहीं हुई बल्कि इसने ज्योतिष को पुनर्विचार और पुनर्संरचना के लिए प्रेरित किया, और इस प्रक्रिया में ज्योतिष ने

स्वयं को एक नए रूप में प्रस्तुत किया, जहाँ यह अब केवल बाह्य घटनाओं की भविष्यवाणी करने वाली विधा नहीं रही बल्कि यह मानव मन, भावनाओं और अनुभवों को समझने का एक प्रतीकात्मक उपकरण बन गई, और इस परिवर्तन में काल युग की अवधारणाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि उन्होंने यह स्पष्ट किया कि ज्योतिष को कारण-कार्य संबंध के रूप में नहीं बल्कि अर्थपूर्ण संयोगों के रूप में समझा जाना चाहिए, और इसी दृष्टिकोण ने आधुनिक ज्योतिष को एक मनोवैज्ञानिक और व्याख्यात्मक प्रणाली के रूप में विकसित किया।

जहाँ ग्रहों और राशियों को मानव मन के विभिन्न पहलुओं के प्रतीक के रूप में देखा जाता है, और इस प्रकार ज्योतिष अब एक ऐसी भाषा बन गई है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने अनुभवों को समझ सकता है और अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण कर सकता है, और यही कारण है कि आज के समय में ज्योतिष का उपयोग केवल भविष्यवाणी के लिए नहीं बल्कि आत्म-चिंतन और आत्म-विकास के लिए भी किया जा रहा है, क्योंकि आधुनिक जीवन को जटिलताओं और अनिश्चितताओं के बीच यह व्यक्ति को एक ऐसा ढाँचा प्रदान करता है जिसके माध्यम से वह अपने अनुभवों को अर्थ दे सकता है और अपने जीवन को एक दिशा प्रदान कर सकता है, और यदि हम इस परिप्रेक्ष्य में 'जब सितारे बोलते हैं' की अवधारणा को समझें तो यह स्पष्ट होता है कि यह

केवल एक रूपक नहीं है बल्कि यह उस वास्तविक अनुभव का प्रतीक है जिसमें व्यक्ति आकाशीय प्रतीकों के माध्यम से अपने जीवन के अर्थ को खोजने का प्रयास करता है, और इस प्रकार ज्योतिष एक ऐसी जीवंत परंपरा बन जाती है जो समय के साथ बदलती हुई भी अपनी मूल आत्मा को बनाए रखती है, और यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि यह न तो पूरी तरह अतीत में सीमित है और न ही पूरी तरह आधुनिकता में विलीन है, बल्कि यह दोनों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करती है, और इस सेतु के माध्यम से यह मानव जीवन को एक व्यापक और गहन दृष्टिकोण प्रदान करती है, और यही आधुनिक ज्योतिष की सबसे बड़ी 'एडवेंचर' या साहसिक यात्रा है कि यह निरंतर बदलते हुए भी अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखता है और मानव जीवन के साथ गहराई से जुड़ा रहता है।

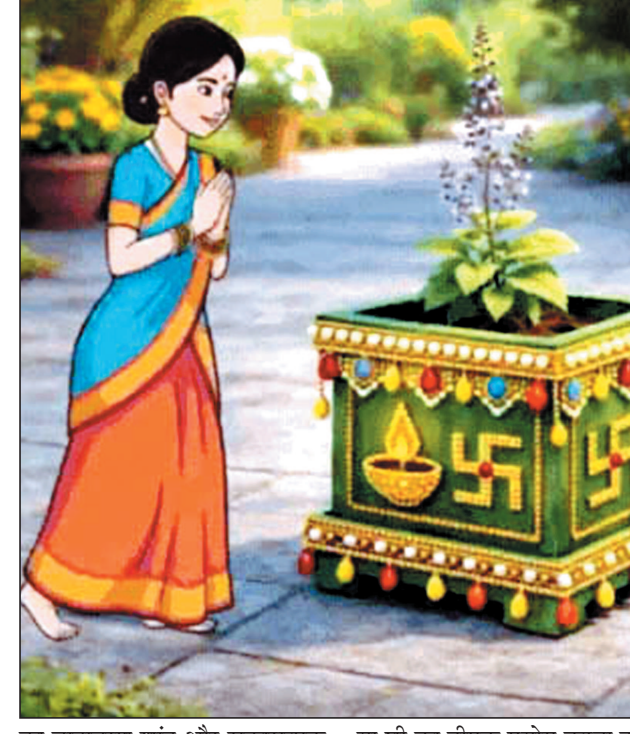
इसी कारण यह कहा जा सकता है कि ज्योतिष की सच्चाई स्थिर नहीं है बल्कि यह एक गतिशील प्रक्रिया है जो समय, संस्कृति और अनुभव के अनुसार अपने अर्थ को बदलती रहती है, और यही इसकी वास्तविक शक्ति है, क्योंकि यह केवल तथ्यों का संग्रह नहीं है बल्कि यह अनुभवों का व्याख्यात्मक तंत्र है जो व्यक्ति को अपने जीवन को समझने और उसे सार्थक बनाने में सहायता करता है, और इस प्रकार 'जब सितारे बोलते हैं' का अर्थ यह नहीं है कि वे हमें सीधे-सीधे भविष्य बताते हैं, बल्कि यह है कि वे हमें एक ऐसी भाषा प्रदान करते हैं जिसके माध्यम से हम अपने जीवन के गहरे प्रश्नों का उत्तर खोज सकते हैं और अपने अस्तित्व के रहस्यों को समझने का प्रयास कर सकते हैं।

घर में पूजा-सज्जा से बढ़े सकारात्मक ऊर्जा

तुलसी का पौधा भारतीय घरों में विशेष महत्व रखता है। इसे केवल पौधा नहीं, बल्कि घर का संरक्षक और सकारात्मक ऊर्जा का केंद्र माना जाता है। तुलसी के पौधे पर जल अर्पित करना और उसके पास दीपक जलाना शुभ रहता है। यह न केवल स्वास्थ्य और समृद्धि में वृद्धि करता है, बल्कि परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम और सहानुभूति को भी बढ़ाता है।

घर के मुख्य द्वार और तुलसी के पौधे पर दीपक और जल अर्पित करने से न केवल घर की ऊर्जा सकारात्मक होती है, बल्कि परिवार में सौभाग्य और शांति का वास भी बढ़ता है। घर को सजाना और उसमें नियमित पूजा करना न केवल धार्मिक कृत्य है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक शांति का भी स्रोत माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, घर के मुख्य द्वार पर हल्का दीपक और ताजे फूल लगाना अत्यंत शुभ होता है। यह न केवल आपके घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है, बल्कि नकारात्मक प्रभावों को भी कम करता है। दीपक का प्रकाश अंधकार और नकारात्मकता को दूर करता है और फूलों की ताजगी वातावरण में सुख और उत्साह भर देती है।

तुलसी का पौधा भारतीय घरों में विशेष महत्व रखता है। इसे केवल पौधा नहीं, बल्कि घर का संरक्षक और सकारात्मक ऊर्जा का केंद्र माना जाता है। तुलसी के पौधे पर जल अर्पित करना और उसके पास दीपक जलाना शुभ रहता है। यह न केवल स्वास्थ्य और समृद्धि में वृद्धि करता है, बल्कि परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम और सहानुभूति को भी बढ़ाता है। प्रतिदिन तुलसी के पास दीपक जलाने से मानसिक तनाव कम होता है और घर



का वातावरण शांत और सकारात्मक बना रहता है। पूजा-सज्जा में ध्यान देने योग्य एक और पहलू है सामग्री का चयन। फूलों में गुलाब, चमेली और गेंदा के फूल विशेष रूप से शुभ माने जाते हैं। दीपक के लिए हल्का तिल का तेल

या घी का दीपक प्रयोग करना उत्तम रहता है। इसके अलावा, घर के मुख्य स्थानों में हल्का रंग और साफ-सुथरा वातावरण रखना भी आवश्यक है। अंधेरे को दूर करने के लिए दीपक का नियमित प्रयोग न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के

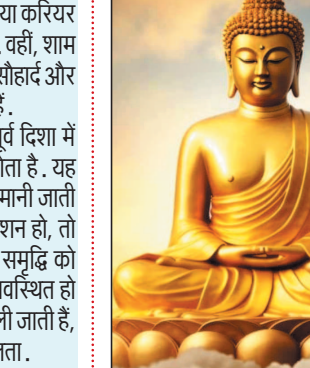
लिए भी लाभकारी है। घर में नियमित पूजा और सजावट करने से घर में न केवल आध्यात्मिक बल्कि भौतिक लाभ भी होता है। परिवार के सदस्य स्वस्थ और खुशहाल रहते हैं। बच्चों की पढ़ाई और करियर में सकारात्मक प्रभाव महसूस किया जा सकता है। तुलसी और दीपक का संयोजन घर की समृद्धि और सुरक्षा का प्रतीक माना जाता है। साथ ही, यह प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने और जीवन में संतुलन बनाए रखने का एक सरल और प्रभावशाली तरीका भी है। आज के समय में, जब लोग तनाव और भागदौड़ की जिंदगी जी रहे हैं, घर में पूजा-सज्जा एक प्रकार का मानसिक विश्राम भी प्रदान करती है। यह रिवाज केवल परंपरा नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी लाभकारी माना गया है। प्रकाश और प्राकृतिक सजावट का प्रभाव घर में शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि लाने में महत्वपूर्ण होता है। घर में पूजा-सज्जा का महत्व केवल धार्मिक कृत्य नहीं, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक संतुलन बनाए रखने का एक प्रभावी माध्यम है। नियमित दीपक जलाना, तुलसी को जल अर्पित करना और ताजे फूलों से घर को सजाना हर परिवार के लिए लाभकारी और शुभ होता है।

घर में तितलियों का आना सदियों से शुभ माना गया है। यह न केवल सौभाग्य का प्रतीक है, बल्कि जीवन में नई संभावनाओं, प्रेम और समृद्धि के संकेत भी देता है। घर में तितलियों का आना भारतीय परंपरा और ज्योतिष शास्त्र में एक सकारात्मक संकेत माना जाता है। यह संकेत केवल सौभाग्य का नहीं, बल्कि जीवन में खुशियों, नई शुरुआत और अज्ञानता में सामंजस्य का भी प्रतीक है। तितलियों की उपस्थिति को अवसर प्रकृति की शुभ चेतावनी कहा जाता है, जो बताती है कि घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ रहा है। विशेषकर रंग-बिरंगी तितलियाँ, जैसे नीली,

घर में तितली का आना लाता है खुशखबरी

पीली या सफेद, घर में आने पर इसे और भी शुभ माना जाता है। इनके आने का समय भी महत्वपूर्ण होता है। सुबह के समय आने

वाली तितलियाँ नयी शुरुआत और शिक्षा या करियर में सकारात्मक बदलाव का संकेत देती हैं। वहीं, शाम के समय आने वाली तितलियाँ परिवार में सौहार्द और सुख-शांति लाने की ओर इशारा करती हैं। ज्योतिष के अनुसार, घर के उत्तर-पूर्व दिशा में तितलियों का प्रवेश विशेष रूप से शुभ होता है। यह दिशा घर की सकारात्मक ऊर्जा का केंद्र मानी जाती है। अगर यह दिशा साफ-सुथरी और रोशन हो, तो तितलियों का प्रवाह घर में खुशियों और समृद्धि को बढ़ाता है। इसके विपरीत, अगर घर अव्यवस्थित हो या गंदगी हो, तो तितलियाँ जल्दी बाहर चली जाती हैं, जिससे शुभ संकेत का पूरा लाभ नहीं मिलता।



बुद्ध पूर्णिमा: प्रेम और शांति का संदेश

बुद्ध पूर्णिमा केवल भगवान बुद्ध के जन्मदिन का पर्व नहीं है। यह दिन उनके जीवन में घटित तीन महाचमत्कार—जन्म, ज्ञान प्राप्ति और महापरिनिर्वाण—के कारण 'तीन बार धन्य उत्सव' कहा जाता है। इस पावन अवसर पर श्रद्धालु शांति, करुणा और अहिंसा के मार्ग पर चलने का संदेश ग्रहण करते हैं। बुद्ध पूर्णिमा का पर्व वैशाख पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन भगवान गौतम बुद्ध के जीवन की तीन सबसे महत्वपूर्ण घटनाएँ घटी थीं, जिन्हें ध्यान में रखते हुए इसे त्रिगुणधन्य दिवस भी कहा जाता है। वर्ष 2026 में यह पर्व शुक्रवार, 1 मई को मनाया जाएगा।

सिद्धार्थ गौतम का जन्म-वैशाख मास की पूर्णिमा को लुंबिनी में राजा शुद्धोधन और रानी महामाया के घर सिद्धार्थ का जन्म हुआ। वे बाद में नानक बुद्ध कहलाए। यह घटना न केवल उनके जीवन की शुरुआत का प्रतीक है, बल्कि मानवता के लिए ज्ञान और करुणा का सार्वभौमिक प्रेरणा लेते हैं।

ज्ञान की प्राप्ति- सिद्धार्थ गौतम ने 35 वर्ष की आयु में बोधगया में बोधि वृक्ष के नीचे ध्यान करके परम ज्ञान प्राप्त किया। इस समय से वे 'बुद्ध' कहलाए और उनकी शिक्षाएँ दुनिया भर में सत्य और करुणा का मार्ग दिखाते लगीं। बुद्ध पूर्णिमा पर बोधि वृक्ष के पास ध्यान और पूजा का विशेष महत्व है।

महापरिनिर्वाण- बुद्ध पूर्णिमा के दिन ही कुशीनगर में महात्मा बुद्ध ने सांसारिक बंधनों को त्याग कर महापरिनिर्वाण प्राप्त किया। इसका अर्थ है जन्म-मृत्यु के चक्र से पूर्ण मुक्ति। इसे ध्यान, संयम और आध्यात्मिक परिपूर्णता का प्रतीक माना जाता है।

इन तीन अद्भुत घटनाओं के कारण बुद्ध पूर्णिमा को केवल महत्वाकांक्षी नहीं, बल्कि जीवन चक्र की पूर्णता और आध्यात्मिक परिपूर्णता का दिन कहा जाता है। इस दिन श्रद्धालु शांति, अहिंसा और करुणा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा लेते हैं।

मोहिनी एकादशी व्रत से मिलती है समृद्धि

27 अप्रैल को मनाई जाने वाली मोहिनी एकादशी भगवान विष्णु के मोहिनी अवतार को समर्पित है। इस व्रत को करने से मोह-माया से मुक्ति, सुख-समृद्धि और जीवन में उन्नति प्राप्त होती है।



मोहिनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु ने समुद्र मंथन के समय मोहिनी रूप धारण किया था, जिससे देवताओं को अमृत प्राप्त हुआ और दानवों से उसका संरक्षण हुआ। पंचांग के अनुसार, एकादशी तिथि का आरंभ 26 अप्रैल की शाम से होगा और इसका समापन 27 अप्रैल की शाम को होगा। उदर्यातिथि के आधार पर व्रत 27 अप्रैल को ही रखा जाएगा। इस दिन ब्रह्म मुहूर्त प्रातः 4:43 से 5:28 तक और अर्धजित मुहूर्त दोपहर 12:11 से 1:02 तक पूजा के

लिए अत्यंत शुभ माना गया है। मोहिनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की विशेष पूजा का विधान है। पूजा के दौरान 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय' और 'ऊं नमो नारायणाय' जैसे मंत्रों का जाप करने से मन शांत होता है और आध्यात्मिक ऊर्जा में वृद्धि होती है। इसके साथ ही विष्णु सहस्रनाम और मंगल स्तोत्र का पाठ भी अत्यंत शुभ माना जाता है। इस प्रकार मोहिनी एकादशी का व्रत न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह जीवन में संयम, भक्ति और सकारात्मक सोच को भी बढ़ावा देता है।

इस व्रत का पारण 28 अप्रैल 2026 को किया जाएगा। पारण का शुभ समय सुबह 6:12 से 8:46 बजे तक रहेगा। धार्मिक मान्यता के अनुसार, एकादशी व्रत का पारण द्वादशी तिथि के भीतर करना आवश्यक होता है, अन्यथा व्रत का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता। मोहिनी एकादशी का व्रत केवल उपासकों नहीं बल्कि आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम माना जाता है। कहा जाता है कि इस व्रत को श्रद्धा और नियमपूर्वक करने से व्यक्ति के जीवन से मोह, माया और नकारात्मक विचार दूर होते हैं। साथ ही घर में सुख, शांति और धन-समृद्धि का वास होता है। भवत इस दिन व्रत रखकर भगवान विष्णु का ध्यान करते हैं और दिगंबर भक्त-कीर्तन में समय व्यतीत करते हैं। शाम के समय दीपदान और तुलसी पूजन का विशेष महत्व होता है।

पश्चिम रेलवे - रत्नलाम मंडल
ई-निविदा सूचना
निविदा सूचना संख्या: M247TWP026
2706, दिनांक: 22.04.2026. कार्य का नाम: 8 वीं लॉकर DETC के उपकरणों के रख-रखाव-असेंबली की आवश्यक औरवैकल्पिक मु. का. प्र. / दाहोद पश्चिम रेलवे कार्यालय कार्य की अनुमानित लागत: रु. 4,69,65,180/- बयाना पत्रिका: रु. 9,39,400/- ई-निविदा जमा करने तथा खुलने की दिनांक तथा समय: ई-निविदा जमा करने की नियत दिनांक तथा समय 13.05.2026 को 14:30 बजे तक तथा ई-निविदा उसी दिन 15:00 बजे खोली जायेगी। टेंडर नोटिस और ऑक्वैरमेंट वेबसाइट [facebook.com/WesternRly](http://www.ireps.gov.in/ E-Tenders / Works / IR Electrical पर उपलब्ध है। AK/17
हॉट लाईन नंबर: <a href=)

